

VARĪH. BRH. S. 29, 9. n. Wort, Rede AV. 1, 30, 2. RV. 10, 27, 10. 125, 4. प्रतिकूलोक्तिः Spr. 1525. — b) *angeredet, zu dem gesagt worden ist*: स केन्द्रेण उक्तः आस ihm war von Indra gesagt worden ÇAT. BR. 14, 1, 2, 19. AV. 12, 1, 55. M. 1, 60, 2, 193. देहीत्युक्तस्य संसदि 8, 52. MBH. 1, 6179. 3, 2102. R. 1, 8, 5. ÇĀK. 35. mit acc.: इत्युक्ता सिन्धुरानि वाक्यं हृदय-कम्पनम् MBH. 3, 15636. विज्ञयमुक्तस्तेः R. 2, 71, 30. Spr. 1724, v. 1. KATHĀS. 18, 247. अर्घ्युक्तः aufgefördert von M. 8, 62. अनुक्तः unaufgefördert KATHĀS. 18, 117. — 2) *Jmd Vorwürfe machen, seinen Unwillen gegen Jmd aussprechen*; mit acc. der Person HARIV. 5268. R. 3, 67, 20, 22. 4, 19, 21. — Vgl. अनुक्तः, उक्तः fgg., उरुक्तः, पुनरुक्तः, पुनरुक्तिः.

— caus. वाचयति 1) *zu sagen —, zu sprechen veranlassen, sagen —, hersagen —, aussprechen lassen* PĀR. GRHJ. 2, 2. वाचयमानो ऽपि न ब्रूते BHĀG. P. 3, 30, 18. यतवाचं वाचयति ताडयति न वक्ति चेत् 11, 23, 86. एनमयो शान्तिं वाचयति AIR. BR. 8, 6. ÇAT. BR. 3, 1, 2, 24. 3, 2, 11. 5, 1, 5, 17. KAUC. 10. 11. 17. 43. ब्राह्मणाभोजयित्वा वेदसमाप्तिं वाचयति für sich erklären lassen ĀCV. GRHJ. 1, 22, 18. 2, 9, 9. स्वस्त्ययनम् 3, 13. 4, 6, 19. वाचयामास रामस्य वने स्वस्त्ययनक्रियाम् R. 2, 25, 28. ब्राह्मणांस्वस्ति वाचयेत् AV. PARIÇ. in Ind. St. 9, 19, N. 1. ब्राह्मणांस्वस्तिवाच्य MBH. 1, 6976. 7936. 15, 51. R. 2, 23, 28. स्वस्तिवाचितेषु ब्राह्मणेषु MBH. 3, 13313. वाचयित्वा पुण्याकम् 2, 1240. द्विजातीन्वाच्य पुण्याकं स्वस्ति चैव 5, 7100. मङ्गलम् BHĀG. P. 1, 12, 13. 10, 53, 10. आशिषः 6, 14, 33. आशिषं वाचयमानो गुरुराशिषं प्रयुञ्जे P. 8, 2, 83, Sch. वाचयित्वा ततः स्वस्ति प्रयुक्तशीर्षिद्विजातिभिः R. 6, 19, 47. mit Ergänzung von स्वस्ति oder eines ähnlichen acc. JĀṬN. 1, 243 (वाचयताम् impers.). वाचयित्वा द्विजश्रेष्ठान् MBH. 3, 788. 16644. 8, 391. 14, 2037. R. 2, 6, 7 (3, 7 GORR.). MĀRK. P. 37, 21. VERZ. d. Oxf. H. 31, a, 11. 15. BHĀṬ. 17, 1. — 2) (etwas Geschriebenes reden lassen) lesen HARIV. 1. 16161. MĀRK. 42, 5. ÇĀK. 17, 4, v. 1. 37, 15. VIKR. 26, 7. MĀLAV. 70, 21. KATHĀS. 5, 69. 8, 19. 42, 93. 44, 158. 161. 56, 90. 63, 178. 102, 134. 124, 98. fg. RĀĀ-TAR. 2, 89. 3, 208. 235. 372. 523. 4, 576. 6, 30. 38. MĀRK. P. 37, 22. PRAB. 33, 11. 49, 8. VERZ. d. Oxf. H. 12, a, 2 v. u. पदं मिथ्या ज्ञाचयति P. 1, 3, 71, Sch. — 3) *sagen, berichten* DHĀTUR. 34, 35 (परिभाषणो, v. 1. संदेशो). कथनीयमवोचत् BHĀṬ. 6, 46. — 4) *zusagen, versprechen*: स्नातकानां सहस्रस्य स्वर्णनिष्कानवाचयत् (अथो दैदा ed. Bomb.) MBH. 7, 4352.

— desid. 1) *zu sprechen —, herzusagen —, zu verkündigen beabsichtigen*: तं विवक्षन्मालहय MBH. 3, 12609. 4, 924. R. 4, 27, 10. BHĀG. P. 4, 9, 4. पुनर्विवक्षन्पदम् RV. PRĀT. 11, 22. 14, 29. विवक्षता दोषम् KUMĀRAS. 5, 81. PANĀR. 3, 7, 3. BHĀG. P. 1, 5, 14. विवक्षमाणा भगवद्विभूतोः 3, 8, 8. विवक्षितं ह्यनुक्तमनुतापं जनयति ÇĀK. 38, 7. MĀLAV. 24, 21. BHĀṬ. 8, 17. ब्रूहि यत्ते विवक्षितम् MBH. 5, 2585. 7481. R. 1, 53, 14 (56, 14 GORR.). विवक्षितार्थं मे ब्रूहि 7, 59, 2, 2. वचो विवक्षितम् RĀĀ-TAR. 3, 481. — 2) *pass. gemeint sein*: शब्दानुशासनशब्देन च पाणिनिप्रणीतं व्याकरणशास्त्रं विवक्ष्यते SARVADARÇANAS. 133, 10. fg. 87, 11. ÇĀK. zu BRH. ĀR. UP. S. 81. विवक्षितं was man im Sinne hat, gemeint, beabsichtigt: शीघ्रमुक्ता यथाकामं यत्ते कार्यं विवक्षितम् MBH. 4, 522. R. 5, 13, 2. मत्वं चक्रुर्विवक्षितम् MBH. 6, 1405. न मे माया विवक्षिता 12, 3314. विदितं मम रक्षिन्द्रं यत्ते हृदि विवक्षितम् 13, 781. ÇĀK. zu BRH. ĀR. UP. S. 268. KULL. zu M. 7, 33. 8, 317. SARVADARÇANAS. 116, 20. 127, 4. 10. 136, 7. Schol. zu P. 1, 4, 54. 2,

4, 49. 5, 1, 12. Schol. zu KAP. 1, 93. अविवक्षितं nicht ausdrücklich gemeint: अयादानादिविशेषकयाभिरविवक्षितं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात् Schol. zu P. 1, 4, 51. was nicht zu urgiren ist, unwesentlich, worauf es nicht weiter ankommt ÇĀK. zu KHĀND. UP. S. 30. Schol. zu P. 1, 3, 20. 2, 3, 65. 3, 2, 109. SĀH. D. 9, 17. Comm. zu NĀJAS. 1, 53. विवक्षितत्वं n. das Gemeintsein ÇĀK. zu BRH. ĀR. UP. S. 268. SARVADARÇANAS. 105, 10. अकारस्य विवक्षितत्वात् so v. a. weil das अ wesentlich ist, in bestimmter Absicht gebraucht worden ist Schol. zu P. 3, 2, 61. — 3) *विवक्षित in naher Beziehung zu Jmd stehend, zu Jmd haltend*: ततस्तान्भेदयित्वा तु परस्परविवक्षितान् (= वोढुमिष्टान् NILAK.) MBH. 12, 3312. तमाज्ञाय प्रत्यनीकविवक्षितम् (प्रत्यनीका देवास्ते विवक्षिता जयं प्रायणीया इत्यभिप्रेतं यस्य तथाभूतं ज्ञात्वा प्रत्यनीकानां विवक्षितमिति वा Comm.) BHĀG. P. 9, 18, 26. विवक्षितांश्च द्विरिन्द्रमुष्यास्तुरंगमानपि so v. a. Lieblingselephanten und Lieblingspferde KĀM. NĪTIS. 13, 48. — Vgl. विवक्षा fg.

— अच्क herbetrufen, begrüßen, einladen: अच्का वोच्य वसुतातिमयोः RV. 1, 122, 5. अच्का देवा ऊचिषे 3, 22, 3. अच्का विवक्षि रोदसी 37, 4, 4. 1, 19. 6, 2, 11. 51, 3. अच्का सूनूर्न पितरौ विवक्षि 7, 67, 1. 72, 3. 8, 64, 2. — Vgl. अच्कावाक, अच्काक्ति.

— अति 1) *Jmd tadeln, Jmd Vorwürfe machen*: यथा मां नातिवोचति (नातिरो ed. BURN.) BHĀG. P. ed. Bomb. 3, 14, 21. — 2) *Jmd über die Gebühr tadeln oder loben*: यो नात्युक्तः प्राक् ब्रूतं प्रियं वा Spr. 4906. — Vgl. अतिवक्त्र (auch in den Nachträgen), अत्युक्त, अत्युक्ति.

— अधि *sprechen —, hilfreich eintreten für* (dat.): अर्थं वोचा नु सुन्वते RV. 1, 132, 1. 2, 27, 6. 7, 83, 2. 8, 20, 26. ते नस्त्राधुं ते ऽवत् त उ नो अर्थं वोचत 30, 3. 48, 14. 56, 6. 10, 63, 11. VS. 6, 33. अर्थवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भियक् 16, 5. — Vgl. अधिवक्त्र, अधिवाक.

— अनु 1) *aufsagen* (Opfergebete u. s. w.) für Jmd (dat. gen.), die Opfereinladung an Jmd richten: दधन्वे वा यदीमनु वोचद्ब्रह्माणि RV. 2, 5, 3. AIR. BR. 1, 12. fg. प्रजापतेो वै स्वयं हेतारि प्रातरनुवाकमनुवक्षत्युभये देवासुरा यज्ञमुपावसन्नस्मभ्यमनुवक्षत्यस्मभ्यमिति स वै देवेभ्य एवान्वब्रवीत् 2, 15. 5, 34. 3, 45. 6, 35. TS. 1, 6, 10, 4. TBa. 3, 3, 8, 6. ÇAT. BR. 1, 5, 1, 16. अचम् 6, 2, 27. 3, 9, 2, 7. अन्वेवैतडुच्यते नेतु ह्यपते 1, 2, 8. ĀCV. ÇR. 1, 2, 1. येषां द्विजानां सावित्री नानूच्यते यथाविधि M. 11, 191. — 2) *Jmd (acc.) mit einem Spruche ansprechen*: अनुक्तः KAUC. 47. fg. — 3) *Jmd Etwas aufsagen* so v. a. *lehren, mittheilen* ÇAT. BR. 2, 3, 4, 31. BHĀG. P. 1, 5, 30. अनुच्यतां तात स्वधीतं किंचिदुत्तमम् 7, 3, 22. — 4) *med. nachsagen* (dem Lehrer u. s. w.) so v. a. *lernen, studieren*: यो ब्राह्मणो विद्यामनुच्य न विरोचैत् TS. 2, 1, 2, 8. अनुच्ये KHĀND. UP. 6, 1, 1. एतद्वा एतैस्त्रिभिरागुभिरन्वेवोचथाः । अर्थं त इतरदनूक्तम् TBa. 3, 10, 11, 4. परोवरं यज्ञो ऽनुच्यते ÇAT. BR. 1, 6, 2, 4. 2, 4, 4, 4. 6, 1, 4, 8. अरण्ये ऽनुच्यमानवादारण्यकम् ÇĀK. zu BRH. ĀR. UP. S. 3. auch act. in dieser Bed.: ब्रह्मानुचुः BHĀG. P. 3, 33, 7. अनुचानं (s. auch bes.) der da studirt, Studirter, Gelehrter VOP. 26, 132. 135. AIR. BR. 2, 2. ÇAT. BR. 10, 6, 1, 3. 11, 4, 1, 8. अनुचानर्विज्ञः KĀTJ. ÇR. 7, 1, 18. KUMĀRAS. 6, 15. अनुक्त (s. auch bes.) studirt, gelernt ĀCV. GRHJ. 1, 22, 15. मया यद्यानूक्तमवादि ते हरेः कृतावतारस्य सुमित्र चेष्टितम् so v. a. wie es von mir gehört würde BHĀG. P. 3, 19, 32. — 5) *beistimmen, Recht geben*: प्रजापतिर्मनस एवानूवाच ÇAT. BR. 1, 4, 5, 11. — 6) *nennen*: मनुना हरिरित्यनूक्तः BHĀG. P. 2, 7, 2. —